हिंदी दर्शन

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल
राजाभोज मार्ग, कोलार रोड, भोपाल, मध्य प्रदेश -462042

संरक्षक
प्रो. मोहनलाल छीपा
कुलपति

मार्गदर्शक
डॉ. संजय पी. तिवारी
कुलसचिव

संपादक
डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
प्रभारी, भाषा एवं अनुवाद विभाग

आकलपन
सागर बोथे

सहयोग
डॉ. राजनारायण अवस्थी
डॉ. कमलनी
ममता
अनिता
अविनाश

प्रकाशन विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	शुभकामना संदेश	मा. कुलपति	1
2.	अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालयः उपलब्धियां एवं सरोकार	डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति	2-6
3.	हिंदी भाषा और भारत में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा	प्रो. मोहन लाल छीपा	7-14
4.	भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी	प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी	15-19
5.	उच्च शिक्षा में भारतीयता : स्वरूप एवं प्रारूप	सुश्री इंदुमति काटदरे	20-24
6.	वैश्वीकरण के दौर में संस्कृतियों में संवाद	प्रो. कुसुमलता केडिया	25-29
7.	विकास की भारतीय संकल्पना-सुमंगलम	डॉ. बजरंगलाल गुप्ता	30-40
8.	हिन्दीः राजभाषा से लोकभाषा तक अंग्रेजी के दबदबे के बीच हिंदी का दम	प्रो- कृपाशंकर तिवारी	41-43
9.	भारतीय गणित	डॉ. सिद्धार्थ शुक्ला	44-52

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय उपलब्धियाँ एवं सरोकार

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
प्रभारी, भाषा एवं अनुवाद विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने जब दूसरी बार 12 दिसंबर, 2008 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली तब उच्च शिक्षा की दृष्टि से मध्यप्रदेश की स्थिति संतोषप्रद नहीं थी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुसार उस समय उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर सकल नामांकन अनुपात 12.4 प्रतिशत था जबकि मध्यप्रदेश में केवल 8.92 प्रतिशत था अर्थात 18 से 33 वर्ष की उम्र के 91 प्रतिशत युवाओं ने महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के तब दर्शन तक नहीं किए थे । प्रदेश के 87 प्रतिशत जिले उच्च शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए थे। चिंतन करने पर ध्यान आया कि उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात का कारण उच्च शिक्षा की कक्षाओं में अध्ययन,अध्यापन एवं शोध का माध्यम अंग्रेजी भाषा का होना भी है । उनकी सरकार सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि करने, कमजोर, वंचित एवं दलित वर्ग की उच्च शिक्षा में सहभागिता बढ़ाने तथा विश्व में उपलब्ध ज्ञान को प्रदेश की मातृभाषा हिंदी में प्रदान करने के उद्देश्य से एक हिंदी माध्यम का विश्वविद्यालय स्थापित करने का स्वप्न देखने लगी तथा उसका नामकरण संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिंदी की आवाज बुलंद करने वाले अप्रतिम वक्ता, कवि और पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के नाम पर करने का निश्चय किया ।02 दिसम्बर, 2011 मध्यप्रदेश विधानसभा के लिए वह ऐतिहासिक दिन था जिस दिन उसने सर्वसम्मति सर्वानुमति से अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय विधेयक पर हस्ताक्षर कर विश्वविद्यालय अधिनियम को स्वीकृति प्रदान की। 19 दिसम्बर, 2011 को मध्यप्रदेश राजपत्र (असाधारण) मध्यप्रदेश अधिनियम क्र. 34, सन् 2011 द्वारा गजट में प्रकाशन के बाद अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना हुई तथा यह अधिनियम 21 दिसम्बर, 2011 से प्रभावी माना गया। आज यह विश्वविद्यालय एक ऐसी आधार भूमि के रूप में प्रस्तुत है, जो उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भारतीय परंपराओं तथा आधुनिक तकनीकों का सहारा लेगा।

इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य एक ऐसी युवा-पीढ़ी का निर्माण करना है जो समग्र व्यक्तित्व विकास के साथ रोजगार-कौशल व चारित्रिक-दृष्टि से विश्वस्तरीय हो। विश्वविद्यालय ऐसी शैक्षिक-व्यवस्था का सृजन करने का पक्षधर है जो भारतीय ज्ञान परम्परा तथा आधुनिक ज्ञान में समन्वय स्थापित करते हुए छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों में ऐसी सोच विकसित कर सके जो भारत केंद्रित होकर संपूर्ण सृष्टि के कल्याण को प्राथमिकता देने में समर्थ हो।

विश्वविद्यालय का लक्ष्य :- अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय का लक्ष्य इस बात से परिलक्षित होता है कि इसने कला, समाज विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, विज्ञान, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, विधि, शिक्षा एवं अन्य आधुनिक दृष्टिकोण के पाठ्यक्रमों का संचालन हिंदी भाषा के ही माध्यम से करने का निश्चय किया है । यह पहल वास्तव में संपूर्ण हिंदी भाषी विद्यार्थियों के लिए एक वरदान सिद्ध होगी। इस कार्य को मूर्तरूप देने के लिए संस्थान ने निम्न नवाचारों को अपनाया है -

01 हिंदी माध्यम से विज्ञान, साहित्य, संस्कृति, कला, दर्शन और अन्य विधाओं के अध्ययन और गवेषणा को प्रोन्नत करना, संकलित करना और संरक्षित करना।

02- अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं तथा भारतीय भाषाओं की शिक्षण सामग्री को हिंदी में बदलना।

03- हिंदी से विदेशी एवं भारतीय भाषाओ में यंत्रानुवाद की प्रक्रिया का विकास करना।

04- हिंदी भाषा के ज्ञान को प्रोन्नत करने के लिए अभिभाषणों, सेमिनारों, परिसंवादों तथा अधिवेशनों का आयोजन करना।

05 - सभी धर्मों और मुख्य प्राचीन सभ्यताओं और संस्कृतियों के अध्ययन तथा गवेषणा कार्य को प्रोत्साहित करना।

विश्वविद्यालय के समक्ष चुनौतियां :- प्रत्येक नई संस्था की स्थापना के समय उससे जुड़ी हुई प्रारंभिक कई चुनौतियां होती हैं। विश्वविद्यालय के समक्ष भूमि, भवन, शिक्षकों, आर्थिक संसाधन एवं प्रशासनिक कर्मचारियों की आवश्यकता प्रमुख थी। भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के अपने परिसर में एक भवन का आबंटन, शासन द्वारा 50 लाख रुपये के प्रारंभिक अनुदान तथा 6 शिक्षकों एवं 2 प्रशासनिक कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति से इस विश्वविद्यालय का कार्य प्रारंभ हुआ। धीरे-धीरे राज्य सरकार ने विश्वविद्यालय का अनुदान 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 5.00 करोड़ रूपये कर दिया। भवन की समस्या के समाधान के लिए पुरानी विधान सभा स्थित कुछ भवनों का आबंटन कर दिया गया तथा मुगालिया कोट ग्राम में 50 एकड़ भूमि का आबंटन कर विश्वविद्यालय को उसके कार्य को बढाने में सहायता प्रदान की। इन आधारभूत चुनौतियों के अतिरिक्त निम्न चुनौतियाँ विश्वविद्यालय ने स्वीकार की हैं -

■ अभियांत्रिकी, चिकित्सा, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, कृषि और प्रबंधन जैसे अंग्रेजी भाषा प्रधान विषयों को हिंदी माध्यम से पढ़ाने और अध्ययन सामग्री की उपलब्धता की चुनौती ।

■ अंग्रेजी एवं भारतीय भाषाओं में उपलब्ध श्रेष्ठ साहित्य के हिंदी में अनुवाद की चुनौती ।

■ देश में अंग्रेजी के पक्ष में बने हुए शैक्षिक वातावरण को हिंदी के पक्ष में बनाने तथा उसकी साख स्थापित करने की चुनौती।

विश्वविद्यालय कार्य की शुरूआत :- 30 जून 2012 को प्रो. मोहनलाल छीपा ने विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण कर विश्वविद्यालय कार्य की शुरूआत की। डॉ. उदय नारायण शुक्ल ने 25 जुलाई 2012 को कुलसचिव का कार्यभार ग्रहण किया। राज्य शासन ने 6 शिक्षकों एवं दो गैर शैक्षणिक कर्मचारियों को प्रतिनियुक्ति पर देकर शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों को गति दी ।

विश्वविद्यालय की प्राधिकारी परिषदों का गठन: विश्वविद्यालय ने अपने अधिनियम की धारा 11 के अंतर्गत साधारण परिषद्, धारा 16 एवं 17 के अंतर्गत कार्यपरिषद्, धारा 23 के अन्तर्गत विद्यापरिषद् तथा धारा 27 के अंतर्गत वित्त समिति का गठन किया। प्राधिकारी परिषद के गठन के बाद विश्वविद्यालय ने अपने उद्देश्यों के अनुसार निर्णय लेकर उनको क्रियान्वित करना प्रारंभ किया ।

■ **हिंदी का वातावरण बनाने हेतु संगोष्ठियाँ एवं सम्मेलन** - पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने से पूर्व विश्वविद्यालय ने प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में वातावरण बनाने हेतु कई संगोष्ठियों व सम्मेलनों का आयोजन किया। 16 अगस्त 2012 को ज्ञान विज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में हिंदी, 03 सितंबर 2012 को कार्य संस्कृति संवर्धन : एक अवधारणा, 14 सितंबर 2012 को चिकित्सा विज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण एवं शोध का माध्यम हिंदी, 15 सितंबर 2012 को धारण क्षम विकास - जैविक कृषि, गौ संवर्धन एवं लोक संस्कृति, 26 दिसंबर 2012 को विश्वविद्यालय के दृष्टि - पत्र

पर चर्चा, 27 दिसंबर 2012 को मंत्र एवं देवत्व विज्ञान विषयक संवाद, 28 दिसंबर 2012 को उच्च शिक्षा में हिंदी की भूमिका, 29 दिसंबर 2012 को अभियांत्रिकी पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम की भूमिका, 6-7 जून 2013 को राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान हिंदी सम्मेलन, 21-22 दिसंबर 2013 को स्वामी विवेकानंद के विचार और भावी विश्व, 25 - 26 मार्च 2014 को प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान परंपरा, तथा 1-2 अगस्त 2014 को राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन तथा भारतीय जीवन मूल्यों, 6 जून 2013 को ''राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान सम्मेलन'', 25-26 मार्च 2014 को ''प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान परंपरा'', 22 नवम्बर 2014 को ''चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी पाठ्यक्रम कार्यशाला'', 22-23 मार्च 2015 मानव प्रव्रजन की घटनाएं और वंशावली लेखन, 20 दिसम्बर 2015 को समग्र ग्राम विकास योजनाएं एवं क्रियान्वयन ग्रामसभा, 21 दिसम्बर 2015 को एक दिवसीय अभियांत्रिकी शिक्षा सम्मेलन, 22 दिसम्बर 2015 को ''भाषा में वर्णरचनाओं का दर्शन तत्व'', 25 दिसम्बर 2015 को ''शिक्षा में भारतीयता व्याख्यानमाला, 25 दिसम्बर 2015 को ''कविता पाठ'', 23 दिसम्बर 2015 को ''हिंदी भाषा के क्षेत्र में तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग'',7-8 जनवरी 2016 को लोक साहित्य में ज्ञान परंपरा, 15-16 अगस्त 2016 को ''आधुनिक भारत की शिक्षा का इतिहास'', 28 जुलाई 2016 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ''भारत की विदेश नीति-समसामैंयिक चुनौतियां एवं समाधान'', 7-8 दिसम्बर 2016 तेजस्वी बालक तेजस्वी भारत, 21 दिसम्बर 2016 को ''मौलिक लेखन एवं अनुवाद'' कार्यशाला भाषाओं आदि पर कार्यशालाओं का आयोजन कर प्रदेश में हिंदी के पक्ष में वातावरण बनाने का प्रयास किया।

■ **संस्थान के पाठ्यक्रम :** आज की रोजगारोन्मुख एवं प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को देखते हुए हिंदी भाषा को एक नवीन दृष्टि और दिशा देना महत्वपूर्ण हो जाता है, चाहे वह भाषा का सैद्धांतिक दृष्टिकोण हो या अनुप्रयोगात्मक क्षेत्र अथवा अभियांत्रिकी या प्रौद्योगिकी पक्ष, इनसे जुड़े बिना आज हिंदी का समुचित विकास तथा संवर्धन असंभव है। इस अवधारणा को केन्द्र में रखते हुए हिंदी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के लक्ष्य प्राप्ति हेतु सत्र 2016-17 तक 18 संकायों में 200 से अधिक पाठ्यक्रमों का निर्माण हिंदी माध्यम से कर लिया गया है। आयुर्विज्ञान संकाय में एम. बी. बी. एस. उपाधि कार्यक्रम के अंतर्गत 4 1/2 वर्षीय पाठ्यक्रम का हिंदी भाषा में प्रारूप तैयार कर लिया गया है ।

परंपरागत विषयों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय ने कई नवीन विषयों को प्रमुखता दी है इनमें जैव विविधता ,पर्यावरण प्रबंधन, जैविक कृषि, अनुवाद विज्ञान, मौसम विज्ञान, लोक संस्कृति, संभार तंत्र एवं आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, सैन्य विज्ञान,उद्यमिता एवं पारिवारिक व्यवसाय प्रबंधन, भारतीय इतिहास एवं वंशावली प्रबंधन, वैदिक गणित, कार्य संस्कृति संवर्धन, औषधीय पादप, गौ सम्पदा विकास प्रशिक्षण तथा मत्स्य एवं मत्स्यकी प्रमुख हैं। भाषा एवं अनुवाद विभाग के अंतर्गत आवश्यकतानुरूप अद्यतन विभागीय प्रयोगशालाओं की स्थापना भी की जा रही है। अनुवाद विभाग अभियांत्रिकी, चिकित्सा विज्ञान, वाणिज्य, विधि और प्रबंधन जैसे अंग्रेजी भाषा-प्रधान विषयों के हिंदी अनुवाद कार्य को प्राथमिकता में लेकर अनुवाद विज्ञान के साथ ही जर्मन, फ्रेंच, पालि, प्राकृत तथा मराठी भाषा के विविध पाठ्यक्रमों का भी विधिवत संचालन कर रहा है।

अभियांत्रिकी संकाय के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक हार्डवेयर रखरखाव, प्रशीतन एवं वातानुकूलन के लिए प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। भविष्य में इस विभाग में स्नातक प्रतिष्ठा (ऑनर्स), स्नातकोत्तर, प्रमाण-पत्र, पत्रोपाधि, एम.फिल एवं शोध आदि पाठ्यक्रम संचालित करने की योजना है।

विश्वविद्यालय मे स्थापित विभिन्न केंद्र : राष्ट्र भाषा हिंदी के वैश्विक आधार को शिक्षा के विविध प्रयोजनों से जोड़ने की संकल्पना ही भारतीय ज्ञान परंपरा को सुदृढ़ विकास की ओर ले जाएगी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इस प्रयोजन के लिए विश्वविद्यालय मे स्थापित विभिन्न केंद्र अपनी महती भूमिका निभाएंगे। जिसमे भारत विद्या अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र, भारत पारीय भारत अध्ययन केंद्र, लोक चिकित्सा और वैकल्पिक चिकित्सा केंद्र, विश्व सभ्यता एवं संस्कृति अध्ययन केंद्र, दृश्य एवं श्रव्य केंद्र, जाबाला-महिला अध्ययन केंद्र, लोक विज्ञान और प्रौद्योगिकी केंद्र,

गर्भ संस्कार तपोवन केंद्र तथा हिन्दी बोली विशिष्ट अध्ययन केंद्र प्रमुख हैं । सोशल मीडिया पर विश्वविद्यालय के आयाम : विश्वविद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ सामाजिक दायित्वों और भारत ज्ञान विज्ञान परंपरा से संबंधित संगोष्ठी तथा सेमिनार आदि के गतिविधि प्रकल्पों का प्रतिस्थापन सोशल मीडिया पर किया गया है ।
यह सर्वस्वीकार्य जन माध्यम समस्त विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय प्रबंधन से जोड़ने और विश्वविद्यालय की सभी सूचनाएँ जन-जन तक पहुंचाने के लिए सेतु का कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय की वेब साइट www.abvhv.org तथा abvhu.214@gmail.com फेसबुक पर जन सामान्य तक जानकारी पहुंचाने का प्रमुख आधार है।
शोध के प्रति रुझान: सत्र 2014- 15 से विश्वविद्यालय के नियमित पाठ्यक्रमों कि तुलना में विद्यानिधि एवं विद्यावारिधि के पाठ्यक्रम अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं विश्वविद्यालय ने 60 विद्यार्थियों के साथ अपना शैक्षणिक सत्र 2012-13 में प्रारंभ किया था जिनकी संख्या सत्र 2013-14 में 358 हो गई वर्तमान सत्र 2014-15 में 4002 छात्रों ने विभिन्न विषयों में अपना पंजीयन करवाया है। शोध के प्रति हिंदी शोधार्थियों की अभिरुचि विश्वविद्यालय के लिए दृढ़ आधार का सृजन कर रही है। वर्ष 2014-15 के शैक्षणिक सत्र के लिए शोध कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों से विद्वानों और पर्यवेक्षकों ने अपनी सहमति प्रदान की है ।

विश्वविद्यालय में छात्र संख्या

शैक्षणिक सत्र	छात्र संख्या
2012 - 13	60
2013 - 14	358
2014 - 15	311
2015 - 16	505
2016 - 17	750

प्रकाशन कार्य: विश्वविद्यालय के द्वारा नियमित प्रकाशन कार्य किया जा रहा है जिसमे अटल संवाद-त्रैमासिक, विवरणिका -2012-13, 2013-14, 2014-15 और 'कह दे कोई बेहतर जुमला' जैसी प्रबुद्ध और संक्षेपिका का प्रकाशन शामिल है।
विश्वविद्यालय के सामाजिक दायित्व : अंत्योदयी परिवारों के उत्थान और समाज के वंचित वर्ग को सामाजिक सहभागिता में सक्रिय भागीदारी निभाने और समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए विश्वविद्यालय ने सामाजिक दायित्वों के लिए अपने मूल नीति निर्धारण कार्यों में प्राथमिकता दी है। इस तारतम्य में सर्वप्रथम ग्राम मुगलिया कोट को गोद लिया गया है साथ ही सहजन वृक्ष को विश्वविद्यालय वृक्ष के तौर पर अपनाया गया है। कृषिगत सुधारों के प्रति किसानों को जागरूक करने के उद्देश्य से जैविक कृषि प्रकल्पों का विकास किया गया है। पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने और शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट के बेहतर निस्तारण के लिए प्लास्टिक कचरे से डीजल उत्पादन का नवाचार अपनाने की योजना है। योग एवं मानव चेतना के वैज्ञानिक आधार को व्यवहार में लाने के लिए सतत रोग आधारित योग शिविरों का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा किया जा रहा है।
विश्वविद्यालय की उपलब्धियां : विश्वविद्यालय ने मंत्रविज्ञान और देवतत्व विज्ञान पर आधारित एक प्रदर्शनी का निर्माण किया जो राष्टीय स्तर पर एक मात्र अनूठी प्रदर्शनी है। डॉ. सुरेन्द्र भटनागर द्वारा निर्मित इस प्रदर्शनी के निम्न बिंदु प्रमुख हैं :- देवनागरी वर्णों के परस्पर सम्बन्ध एवं उनकी उत्पत्ति, बीजाक्षर एवं मंत्र विज्ञान, यंत्र रचना विज्ञान, देव

प्रतीक और उनके पशु वाहनों और आयुधों के अर्थ, अवतार सिद्धांत। भारतीय समाज में जहां हर घर में किसी न किसी रूप में देवता की पूजा होती है इस हेतु यह प्रदर्शनी जन आकर्षण का केंद्र है। इसके अतिरिक्त भारतीय ज्ञान विज्ञान परंपरा पर एक अन्य प्रदर्शनी डॉ. श्री निवास मिश्रा द्वारा निर्मित की गई है जिसमे आधारभूत विज्ञान एवं प्राचीन भारतीय अनुसंधान को दर्शाया गया है। यह पाठ्यपुस्तकों के लिए एतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सामग्री है तकनीकी पुस्तकों के अनुवाद, भाषा एवं अनुवाद विभाग की प्राथमिकताओं में हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रो. दाभोलकर की जैविक कृषि से संबन्धित प्रतिष्ठित पुस्तक 'नेचुरल ईको फ़ार्मिंग' का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कार्य किया गया है। परंपरागत ज्ञान के क्षेत्र में ''वृहस्पति स्मृति'' का हिन्दी अनुवाद किया गया है और प्रशासन से संबंधित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अध्यादेशों, विनियमों एवं परिनियमों का हिन्दी अनुवाद किया गया है। विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. श्रीनिवास मिश्र के द्वारा नर्मदा घाटी अमरकंटक में खोजे गए चार करोड़ वर्ष पुराने नारियल के जीवाश्म को अन्तर राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। विश्वविद्यालय की संबद्धता को प्राप्त करने के लिए राष्टीय स्तर के कई संस्थानों यथा-विवेकानंद योग अनुसंधान केंद्र बंगलूरु और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने एम. ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए हैं। साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन भोपाल में सक्रिय भागीदारी की और सिंहस्थ महाकुंभ में भी सक्रिय योगदान दिया।

भविष्य की परियोजनाएँ : स्ववित्त पोषित और अनुदान प्राप्त दोनों ही तरह की परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए विश्वविद्यालय प्रतिबद्ध है। इस श्रृंखला में भाषा एवं अनुवाद विभाग द्वारा अनुवाद विश्वकोश परियोजना का सृजन कर संचालित करने की योजना मूर्तरूप ले रही है। मशीनी अनुवाद पर संश्लिष्ट एवं सर्वांगीर्ण दृष्टिकोण (हिंदी, अंग्रेजी एवं संयुक्त राष्ट्र की अन्य भाषा, अन्य भारतीय भाषा) को परिलक्षित करने के लिए भाषा तकनीकी प्रयोगशाला अर्थात भाषा ध्वनि प्रयोगशाला की स्थापना प्रस्तावित है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन अध्यापन को समुचित प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विदेशी छात्रों के लिए शैक्षणिक पाठ्यक्रम एवं शोध कार्यक्रम का सृजन विश्वविद्यालय के द्वारा किया जा रहा है। प्राचीन ज्ञान और ग्रन्थों को सहज रूप से पठन-पाठन का आधार बनाने की अभिलाषा से ई-पुस्तकालय स्थापना की वृहद कार्ययोजना का कार्य प्रगति पर है। सनातन धर्म से आबद्ध संस्कार और वैज्ञानिक परम्पराओं को आधार बना कर गर्भस्थ शिशु से युवा अवस्था तक पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के लिए गर्भ संस्कार तपोवन केंद्र परियोजना के नवाचार को अपनाने वाले मध्य प्रदेश के एकमात्र संस्थान का गौरव विश्वविद्यालय को प्राप्त कराने की योजना है। इस हेतु संस्थान के एक विशिष्ट परामर्शी दल को राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। उत्तरोत्तर प्रगति के नित नए आयामों को प्राप्त करते हुए विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय के तौर पर स्थापित करना ही हमारा परम ध्येय है।

विश्वविद्यालय का संकल्प: हम अपने आपको एक ऐसे भारत राष्ट्र के लिए समर्पित करते हैं, जो समय से पहले सोचता हो और आत्मसम्मान के साथ विश्व के राष्ट्रों की बिरादरी में अपनी भूमिका का निर्वाह करता हो। हम संभावनाओं का निर्माण करेंगे। यह एक भागीरथ प्रयत्न है। पर हम इसे अपनी क्षमता से पूरा करेंगे। हम एक ऐसा शिक्षा तंत्र रचना चाहते हैं जो अपने जन समूहों की आवश्यकताओं के अनुकूल तकनीक का निर्माण करे और ऐसा न हो जो विश्व की महाशक्तियों के लिए केवल तकनीकी तंत्री तैयार करें।